महत्व स्मृति का -ब्र.कु.जगदीश

ध्यान से देखा जाए तो यह संसार स्मृति और विस्मृति का एक अद्भुत खेल है। हरेक मनुष्यात्मा में ये दोनों प्रकार की योग्ताएं समाहित हैं। ये आत्मा से अभिन्न हैं। कोई भी क्रियाशील, कार्यरत अथवा चेतन प्राणी इस कर्म क्षेत्र पर किसी क्षण इनसे रहित नहीं होता बल्कि यदि यह कहा जाए कि मनुष्य के शिक्षण-प्रशिक्षण, उसकी धारणा-अवधारणा, उसके ज्ञान-विज्ञान और कर्म-विकर्म का ये मूल है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। क्या कोई कर्म ऐसा है जिसे करते समय मनुष्य स्पष्ट अथवा अस्पष्ट रूप से या प्रगट व गुप्त रूप से किसी-न-किसी बात की, उद्देश्य की, घटना की अथवा व्यक्ति की स्मृति में न हो? माँ एक बजे खाना बनाते समय इस स्मृति में होती है कि बच्चा स्कूल से लौटने वाला होगा। ऐसे ही प्रात: उठने के समय से लेकर रात्रि के सोने के समय तक स्मृति की सुई एक ऑटोमेटिक घड़ी की तरह क्षण-क्षण चलती ही रहती है। यहां तक कि निद्रा रूपी विस्मृति की स्थिति में जाने की भी उसे स्मृति रहती है और निद्रा में भी अनेक बार स्वप्न रूप में उसके मन में कई प्रकार की स्मृतियां उभर आती हैं।

अत: जबकि स्मृति अटूट है, आत्मा से अभिन्न है और कर्म का मूल है और पाप-पुण्य, वर्तमान-भविष्य, विद्या-अविद्या सब इसी पर टिके हैं तो इस अद्भुत योग्यता, शक्ति अथवा गुण को समझना बहुत ज़रूरी है। आश्चर्य की बात है कि इस अनुपम योग्यता की ओर चिन्तकों का यथा-वान्छित ध्यान नहीं गया। शिव बाबा ने ही आकर ब्रह्मा बाबा के माध्यम से इस जादू-भरी शक्ति का सदुपयोग समझाया है और इसके गलत प्रयोग से होने वाले दुष्परिणामों से भी अवगत कराया है।

शिव बाबा ने सतयुग के आदि से लेकर कलियुग के अन्त तक के समूचे इतिहास की व्याख्या इसी एक दार्शनिक तत्व को लेकर समझाई है। उन्होंने उदाहरणों से इस रहस्य का उद्घाटन किया है कि मनुष्य की दृष्टि, वृत्ति, स्थिति और कृति का सम्बन्ध उसकी स्मृति से कैसे है और किस प्रकार आत्मिक तथा ईश्वरीय स्मृति के द्वारा वह नर से नारायण बन जाता है और इसी बात की विस्मृति के फलस्वरूप वह देव से मानव और मानव से दानव में बदल जाता है। उस सारे दर्शन को समझने से लगता है कि यह एक स्मृति 'अल्लाहदीन के चिराग' या अली बाबा के 'खुल जा सिम-सिम' से भी अधिक चमत्कारी और फलोत्पादक है।

वास्तव में देखा जाये तो विस्मृति का अपना कोई अलग अस्तित्व नहीं बल्कि आत्मा के इस स्वभाव के कारण कि वह एक समय में एक की स्मृति में रह सकती है, उसे दूसरी बातों की विस्मृति स्वत: ही हो जाती है। जैसे एक व्यक्ति एक कमरे में उपस्थित होने से दूसरे कमरों में स्वत: और स्वभावत: अनुपस्थित होता है। वैसे ही जब हम 'आत्मा हैं' की स्मृति में स्थित होते हैं तब देह की विस्मृति स्वत: ही हो जाती है; उसके लिए हमें कोई अलग से पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता। इसी प्रकार, जब कोई मनुष्य देह और देह के सम्बन्धियों की स्मृति में होता है तब वह आत्मिक विस्मृति में होता है। अत: जबकि किसी-न-किसी की स्मृति में हम स्वभावत: रहते ही हैं और स्मृति का ही हमारे हरेक कर्म से घनिष्ठ सम्बन्ध है तो बुरे कर्मों से बचने के लिए और श्रेष्ठ धारणा के लिए यह जानना आवश्यक है कि किस स्मृति में रहें। स्वयं को सतयुग अथवा आदिकाल में देवता मानने की स्मृति में स्थित करने से हममें पुन: दैवी गुणों का संचार होता है और परमधाम वासी ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमात्मा को परमपिता बनाने से तथा उनकी स्मृति से हमारे में सद्गुणों का उत्कर्ष होता है।

'प्रेम' करता है बच्चों का सर्वांगीण विकास -ब्र.कु शोभिका

कहते हैं 'चाइल्ड इज़ द फादर ऑफ द मैन'। बालक ही मनुष्य का भविष्य होता है। जैसा बचपन होगा वैसा ही बड़ा होकर इंसान बनेगा। 'जैसा बोओगे वैसा ही काटोगे' यह कहावत मानव जीवन पर बिल्कुल खरी उतरती है। इसलिए बाल्यावस्था का सही विकास होना बहुत ज़रूरी है। यह तभी संभव है जब मनुष्य अपने बच्चों के साथ प्रेम करे और धैर्य का परिचय दे।

जब आप प्रेम से बोलते हैं तो लगता है जैसे आपकी वाणी फूल बरसा रही है, किंतु इसी वाणी को जब आप क्रोध और घृणा में लपेट कर उगलते हैं तो यह सामने वाले पर हंटर की मार जैसी पड़ती है। प्रेम की भाषा ही दुनिया की एक ऐसी भाषा है, जिसे इंसान ही नहीं, पशु-पक्षी व जीव-जन्तु तक समझते हैं।

प्रेम में अद्भुत शक्ति है, प्रेम में शान्ति है, प्रेम में सुख व आनंद है। प्रभु से मेल भी प्रेम के मार्ग पर चलकर ही होता है। प्रेम से आपको अपना इच्छित फल प्राप्त होता है। प्रेम के सहारे ही आप अपने कष्टों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। जिस प्रकार दया के प्रभाव से दुष्टता नष्ट हो जाती है, उसी प्रकार प्रेम के प्रभाव से आपके मन में उठने वाले दुष्ट विचार भी नष्ट हो जाते हैं।

एक माता अपने बालक का पालन ही नहीं करती, बल्कि उसका निर्माण भी करती है। माता-पिता का प्रेमपूर्ण व्यवहार बालक में आत्मशक्ति का संचार करता है और वह संकुचित विचारों तथा भयपूर्ण कल्पनाओं की तरफ आकर्षित नहीं होता।

बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए ध्यान देने योग्य बातें :-

- बच्चों के सामने सदैव विजय, उत्साह, सफलता और उन्नति की ही बातें करें। इससे उनकी आत्मशक्ति को बल मिलेगा और उनका मन सदा हर्ष और उल्लास से पूर्ण रहेगा।
- बच्चों को कभी हतोत्साहित मत कीजिए, उन्हें सदा प्रोत्साहित कीजिए। इससे उनमें आत्मविश्वास पैदा होगा और संशय तथा संदेहयुक्त चरित्र वाला डरपोक बालक भी आशा से अधिक सफलता व उन्नति प्राप्त कर लेगा।
- बच्चों के साथ कभी भी 'मूर्ख' 'आलसी' जैसे दुर्वचनों का प्रयोग न करें, इससे बालक का स्वभाव बिगड़ जाता है, उसमें आत्महीनता की भावना जागृत हो जाती है और उन्नति के समस्त मार्ग उसके लिए बन्द हो जाते हैं।
- अपने सुयोग्य व तीक्ष्ण बुद्धि बालक को भी बार-बार यह कहकर उसके स्वभाविक विकास में बाधक न बनें कि 'तुम तो सुस्त हो, तुम कुछ नहीं कर सकते' आदि। बार-बार ऐसा कहने पर बालक यह समझ लेता है कि वह वास्तव में मूर्ख है और कभी तरक्की नहीं कर पाएगा। वह स्वयं अपनी उन्नति के मार्ग से विचलित हो जाता है।
- डर या डण्डे के जोड़ से बच्चों को न धमकायें, बल्कि उसे ईमानदारी से अपनी बात मानने के लिए प्रेरित करें। यदि आपका व्यवहार प्रेमपूर्ण होगा तो बच्चे सदैव आपका कहना मानेंगे।
- बच्चों को इतनी स्वतंत्रता तो अवश्य दें कि उनमें कोई बुराई न पनपे और उनका विकास स्वभाविक रूप से हो सके।
- खेलने-कूदने के समय उनमें उत्साह जागृत करें। यदि वे स्वास्थ्यप्रद खेल खेलते हैं तो उन्हें रोकें नहीं। ऐसे समय पर उन्हें रोकना उनके बचपन को नष्ट करना है।
- हर काम के लिए बच्चों को डांटे नहीं, इससे उनका कोमल मन उदास हो जाता है और उनके मानसिक विकास के मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं। इस समय पैदा हुआ संकोच आयु-भर उनका पीछा नहीं छोड़ता।
- बालकों को बीमारी और व्याधियों से दूर रखने के लिए सदा उनके मन में स्वस्थ विचार ही भरें। भय के कारण बीमारी पैदा होती है, उससे बचने के लिए बालक के मन में यह विश्वास जमा देना चाहिए कि स्वास्थ्य और सुख पर उसका पूर्ण अधिकार है।
- काल्पनिक भय दिखाकर बच्चों को कभी डरायें नहीं, इससे बालक चुप तो हो जाता है परन्तु धीरे-धीरे उसके मन में सदा के लिए डर बैठ जाता है।
- स्वयं रात को चैन से सोने के लिए बच्चों को अफीम अथवा कोई अन्य मादक पदार्थ खिलाकर न सुलायें। इससे बच्चा सोता तो रहता है परन्तु उसके शरीर को बहुत हानि पहुंचती है। मादक पदार्थ का प्रभाव बालक के मानसिक विकास को अवरुद्ध कर देता है। वह बुद्धिहीन और मूर्ख बन जाता है।
- जब बालक डर रहा हो अथवा किसी बात से भयभीत हो तो उसे मारना नहीं चाहिए। ऐसे समय माता-पिता व्यर्थ ही बच्चे को मारा करते हैं। उस समय तो बालक मार-पीट सह लेता है, परन्तु उसके मन में मार-पीट करने वाले से बदला लेने की भावना ज़ोर पकड़ती है।
- बालक को उसकी रूचि के विपरीत कार्य में न लगाएं, इससे उसका भविष्य अन्धकारमय हो जाता है और उसकी प्रतिभा का विकास वहीं रुक जाता है।

आपका यह कर्तव्य है कि आप अपने बच्चों के सामने विजय, उत्साह, सफलता और उन्नति की ही बातें करें। इससे उनकी आत्मशक्ति को बल मिलेगा और उनका मन सदा हर्ष और उल्लास से पूर्ण रहेगा। बच्चों की उन्नति और उनके सुखद भविष्य के लिए इस प्रकार के विचार आवश्यक हैं। ऐसे विचारों से युक्त बालक जीवन में कभी भी असफल और दु:खी नहीं होते। प्रत्येक बालक को बाल्यावस्था से ही यह सिखाना है कि उसे स्वयं की योग्यता पर पूरा भरोसा रखना चाहिए तब उसमें यह विश्वास जागेगा कि वह प्रत्येक कार्य कर सकता है। इस प्रकार की उत्साहपूर्ण सीख से उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा, उसकी शारीरिक और मानसिक शक्तियों का विकास होगा और उसके जीवन में शान्ति और शक्तियों का विकास होगा और उसे शान्ति और सफलता प्राप्त होगी।

पानीपत-हरियाणा। राजेश्वर कपूर,पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन्स क्लब ब्र.कु.सरला को "लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड" देते हुए। साथ हैं दिनेश गुप्ता,अध्यक्ष एस.डी. कॉलेज एवं राकेश गर्ग,अध्यक्ष लायन्स क्लब।

शास्त्रीनगर-म.प्र.। टी.वी. कलाकार बहन सांची को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. संगीता। साथ हैं ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

जबलपुर-बरेला-म.प्र.। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मालती तथा ब्र.कु. नीलू।

जबलपुर-नेपियर टाउन। यातायात सड़क सुरक्षा सप्ताह के अंतर्गत पुलिस कंट्रोल रूम में अपना वक्तव्य देते हुए डॉ. श्याम रावत। साथ हैं ब्र.कु. ज्योति तथा डी.एस.पी. बी एल तिवारी।

वडगांव-महा.। पत्रकार दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में आद्य पत्रकार आचार्य बालगंगाधर शास्त्री जांभेकर का अभिवादन करते हुए पुलिस निरिक्षक संजीव पाटील, पत्रकार संतोष सणगर तथा ब्र.कु. सुनिता।

सूरतगढ़-राज.। वीर तेजा जी जाट गर्ल्स होस्टल में ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में होस्टल इंचार्ज मोहन देलू, ब्र.कु.रानी, ब्र.कु.मीना तथा अन्य।